'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक १०० | वाराणसी, गुरुवार, ३ सितम्बर, १९५९ | पचीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन

पहलगाँव (कश्मीर) १३-८-'५९

अगर आत्मदर्शन नहीं हुआ तो केवल अमरनाथ के दर्शन से क्या होगा ?

सच्चा फैसला तो अपने दिल में ही होता है। दिल ही हमसे कहता है कि "कम्बख्त, तेरे सिर पर पुण्य का अहंकार चढ़ा है। अहंकार चढ़ा, याने तुम नीचे गिरे। बहुत ऊँचे चढ़कर नीचे गिरना बिलकुल ही कम्बख्ती है। उसमें तूने क्या कमाया ? कमाने के बाद कुल का कुल गँवाया !"

जप तप : साधक भी, बाधक भी

आध्यात्मिक उन्नति में सबसे बड़ी चीज है अपने को पहचानना। जप, तप, ग्रंथपठन, ध्यान, परोपकार, सेवा, यात्राएँ आदि पचासों प्रकार की आध्यात्मिक साधना चलती है। कुछ ज्ञानी उसे गलत मानते हैं, लेकिन मैं उन प्रकारों को गलत नहीं मानता। अगर हम अपने को पहचानते नहीं तो ये सब प्रकार गलत हो सकते हैं।

आध्यात्मिक उन्नति न संसार से होती है, न जप, तप, ग्रंथपठन से होती है, न शादी करने से होती है, न शादी छोड़ने से होती है, न गृहस्थ बनने से होती है, न संन्यासी बनने से होती है। वह तो अंदर की ठीक से पहचान हो जाने से होती है। लेकिन ठीक पहचानने के लिए जो लायक मन चाहिए, वह मन बनाने में शायद उन चीजों का थोड़ा उपयोग होता है। ध्यान, जप, तप, सत्संगति, संयम, यात्रा आदि कुछ न कुछ किया होता है तो उससे चित्त बनाने में मदद मिलती है। जो चित्त सोचेगा और अपने अंदर जाकर परख करेगा कि मैं कौन हूँ, उसके लिए जप-तपादि चीजों की मदद हो सकती है। वैसे इन चीजों से इसमें मुश्किलात भी पैदा हो सकती हैं। घोड़े पर चढ़कर मुकाम पर पहुँचना भी संभव है और नीचे गिरना भी संभव है। जप, तप आदि सब चीजों से अपना मन 'आत्मा के, अंदरूनी विषय में सोचने लायक बन जाय, यह भी मुमकिन है और इन सब चीजों के कारण पुण्यजाल में फँस जाय, यह भी संभव है। जैसे पापजाल में फँसकर मनुष्य का मन बंधन में पड़ सकता है और फिर गिर सकता है, वैसे ही पुण्य-जाल में फँसकर भी गिर सकता है। कभी-कभी सिर पर चढ़ा हुआ पाप का बोझ नीचे पटकना असान हो सकता है, लेकिन सिर पर चढ़ा हुआ पुण्य का बोझ नीचे पटकना आसान न होकर मुश्किल होता है।

ये बातें आपके सामने रखकर मैंने आपको कुछ मदद पहुँचायी या नहीं, मुझे पता नहीं। लेकिन मदद पहुँचाने की कोशिश जरूरी की है। आप अपनी यात्रा जरूर पूरी करें और इन बातों पर सोचें।

अमीरों से ! गरीबों से !!

जिस काम के लिए मैं यहाँ आया हूँ, उस काम का कोई बोझ मेरे सिर पर नहीं है, क्योंकि उसका बोझ आप सबके सिर पर है। मेरे लड़के की शादी का सवाल होता तो मेरे सिर पर बोझ होता। लेकिन मैं चाहता हूँ कि हिन्दुस्तान के गरीबों को जमीन मिले और अमीरों की रूहानी तरक्की हो।

आज देश में गरीबों की माली गिरावट (आर्थिक पतन) हुई है और अमीरों की रूहानी गिरावट (आध्यात्मिक पतन) हुई है। इसका मतलब यह नहीं कि गरीब रूहानियत में आगे बढ़े हुए हैं। वे भी बेवकूफ हैं। चोरी, आलस्य, व्यसन आदि दोष उनमें भी हैं, जो पाप के परिणाम हैं। अमीरी भी पाप का परिणाम है। लेकिन दोनों में जरा तुलना करके देखें तो कहना होगा कि गरीबों की माली गिरावट ज्यादा है और बड़े लोगों की रूहानी गिरावट ज्यादा है। दोनों की दोनों किस्म की गिरावट न हो, यही मेरा उद्देश्य है।

हम यह नहीं चाहते कि सिर्फ गरीबों की उन्नति हो, बल्कि हम चाहते हैं कि सबकी उन्नति हो। तरक्की होती है तो सबकी होती है और गिरावट होती है तो भी सबकी होती है, ऐसा मैं मानता हूँ।

आध्यात्मिकता का प्रयोग सामाजिक क्षेत्र में हो

बंगाल में विष्णुपुर में एक तालाब के किनारे बैठकर रामकृष्ण परमहंस की पहली दफा समाधि लगी थी। मैं भूदान-यज्ञ के सिलसिले में वहाँ पहुँचा था। मेरी यात्रा तो आप लोगों के दर्शन के लिए ही चल रही है, दूसरे-तीसरे भगवान के दर्शन के लिए नहीं चल रही है। मेरे लिए आप ही भगवान हैं। लेकिन इस यात्रा में जैसे दूसरे गाँव आये, वैसे ही विष्णुपुर भी आया था।

www.vinoba.in

वहाँ पर मैंने कहा था कि मेरी ख्वाहिश है कि सामाजिक समाधि हो। जैसे वैज्ञानिक प्रयोगशाला में तजुरबे (प्रयोग) करता है और उसका कुछ नतीजा आने पर उसे समाज पर लागू किया जाता है, प्रयोगशाला के तजुरबों में एक चीज बनती है तो फिर बाद में बड़े कारखाने में बड़े पैमाने पर चीज बनायी जाती है, वैसे ही आध्यात्मिक प्रयोग भी पहले व्यक्ति जीवन-क्षेत्र में किये जाते हैं और फिर समाज में लागू किये जाते हैं। गांधीजी ने हमें यह चीज बतायी। इसका मतलब यह नहीं कि पुराने लोगों ने यह चीज नहीं पहचानी थी। सामाजिक साधना के लिए पुराने लोगों से पचासों मन्त्र मिलते हैं। लेकिन वे मन्त्र किताबों में पड़े हैं। इस जमाने में गांधीजी ने वही चीज कही है। हम उनकी कृपा-दृष्टि में पले हैं, उनसे हमें बहुत मिला है, दूसरों से भी मिला है। उन्होंने कहा कि मैं सामाजिक समाधि चाहता हूँ।

आत्म-दर्शन की जरूरत

मैं और आप किसी एक अकेले जिस्म में गिरफ्तार नहीं हैं। जिसने माना कि मैं इसी शरीर में पड़ा हूँ और सामने जो शरीर दीखते हैं, उनमें नहीं पड़ा हूँ, उसने असलियत नहीं पहचानी। माँ पहचानती है कि मैं बच्चे में भी हूँ। लेकिन वह शारीरिक चीज है। बच्चा उसके शरीर से ही पैदा होता है, इसलिए उसे ज्ञान होता है कि उसमें मैं हूँ, मैं उससे अलग नहीं हूँ। यही बात हमें हमारे समाज के लिए पहचाननी चाहिए कि मैं एक शरीर में महदूद नहीं हूँ, सारे शरीर मेरे हैं।

इसीलिए भूदान-ग्रामदान की मेरी जो कोशिश चलती है, उसका मुझपर जाती बोझ नहीं है। मैं मानता हूँ कि आप सब लोग चाहेंगे तो यह काम चंद दिनों में खत्म होगा और अगर आप नहीं चाहेंगे तो नहीं होगा। मैंने ऐसा कोई अहंकार अपने सिर पर नहीं रखा है कि मैं यह मसला हल करनेवाला हूँ। परमेश्वर की कृपा से मैं बिलकुल बेफिक्र घूमता हूँ। मैं चाहता हूँ कि आप प्यार से समझ-बूझकर दान दें। दान देने में यह बात नहीं है कि उससे पुण्य मिलने की आशा रखी जाय। मैं खाता हूँ तो पुण्य कमाने के लिए नहीं खाता हूँ, उसी तरह से दूसरों को कुछ देता हूँ तो पुण्य कमाने के लिए नहीं देता हूँ, यही विचार रहना चाहिए। जैसे खाना कुदरती है, वैसे ही दूसरों को देना भी कुदरती है, ऐसा समझकर दान दीजिये।

नदी है, नहानेवाले हैं

आप अमरनाथ जानेवाले हैं तो परमेश्वर की कृपा से कुछ-न-कुछ दर्शन, प्यार आप ले जायँगे, उसके साथ यह चीज भी ले जाइये और वापस लौटने पर हिंदुस्तान में जहाँ भी आप जायँ, इस काम को अपना समझकर उठा लीजिये। कल आप अमरनाथ जायँगे, इसलिए हमारी बातें सुनने के लिए नहीं रहेंगे, दूसरे लोग रहेंगे। नदी बहती रहती है, नहानेवाले दूसरे-दूसरे आते रहते हैं, वैसे ही मैं बोलता हूँ और सुननेवाले अलग-अलग होते हैं। [गतांक से समाप्त] ◆◆◆

प्रार्थना-प्रवचन

श्रीनगर (कश्मीर) ५-८-'५९

'पदे-पदे यन्नवतामुपैति तदेव रूपं नवशिक्षणस्य'

१५ अगस्त १९४७ के दिन हिन्दुस्तान को आजादी मिली। उस दिन एक तकरीर में मैंने वर्धा में कहा था कि जैसे नया राज्य आता है तो पुराना झंडा नहीं चल सकता है, नये राज्य के साथ नया झंडा ही होता है, वैसे ही जहाँ नया राज्य आता है, वहाँ पुरानी तालीम एक दिन भी नहीं चलनी चाहिए। अगर नये राज्य में भी पुरानी तालीम चलेगी तो समझना चाहिए कि अभी पुराना राज्य चल रहा है।

नयी तालीम : मेरा जिन्दगी का विषय

यह चीज गांधीजी के मन में वर्षों से थी। दक्षिण अफ्रीका में उन्होंने तालीम के कुछ प्रयोग किये थे। यहाँ भी किये थे। उनके उन प्रयोगों में हम सब शामिल थे। मेरा तो यह जिंदगी का विषय रहा है। इसलिए मैंने वर्षों से इसपर सोचा है और काफी काम भी किया है। मैं कॉलेज में था, तब उस तालीम से मुझे कोई समाधान नहीं था, तसल्ली नहीं थी। नतीजा यह हुआ कि एक दिन मुझे कॉलेज छोड़ना ही पड़ा। मैं चहाँ था, लेकिन भागना ही चाहता था। उसमें मुझे कोई चीज ही नहीं दीखती थी, बिलकुल नाचीज मालूम होता था।

उसके बाद मैं गांधीजी के पास पहुँचा। नयी तालीम का काम मैं उन्हीं दिनों से करता आया हूँ। वहाँ नयी तालीम के बच्चे काफी अच्छा काम करते थे। मुझे काफी तजुरबा हुआ। हिंदुस्तान को स्वराज्य हासिल हुआ, उसके दस साल पहले से ही नयी तालीम का मनसूबा गांधीजी ने तैयार किया था। वैसा का वैसा ही हम वह कबूल करें, ऐसा तो मैं कभी नहीं कहूँगा। हमें अपने दिमाग से सोचना चाहिए। बुजुर्गों की सलाह लेकर, आज के हालात क्या हैं, उनके साथ ताल्लुक रखते हुए, जो चीज हमें अच्छी लगती है, वही करें। लेकिन उन्होंने जरा दूर नजर रखकर नयी तालीम का नया विचार लोगों के सामने रखा।

स्वराज्य-प्राप्ति के दस साल बाद यह बात सरकार के ध्यान में आयी कि पुरानी तालीम देश को फायदा नहीं पहुँचायेगी। स्वराज्य को मजबूत करने के लिए, देश की ताकत बढ़ाने के लिए पुरानी तालीम काम नहीं आयेगी। इसलिए नयी तालीम को बदले हुए रूप में ही क्यों न हो, लेकिन कबूल करना ही होगा। यह बात दस साल के बाद सरकार के ध्यान में आयी और तय किया गया कि नयी तालीम चलानी है। पर वह चीज चलती नहीं है। हमारी सरकार के द्वारा कई अच्छे काम हुए हैं। उनके लिए मैं सरकार को धन्यवाद देता हूँ और तारीफ भी करता हूँ। दूसरे भी लोग तारीफ करते हैं। लेकिन तालीम और जमीन के बारे में किसी प्रकार की कोई तरक्की सरकार ने नहीं की है। यह दो विभाग ऐसे ही रह गये हैं कि इसमें सरकार कुछ भी नहीं कर पायी है। इसके बारे में हमारी सरकार कुछ आगे नहीं बढ़ पायी है। देश में कई पुराने लोग हैं, जिन्हें पुरानी तालीम मिली है। उसकी वे इज्जत महसूस करते हैं और कहते हैं कि हम उससे पढ़े हुए हैं। उसीमें से बने हैं। वे यहाँ तक कहते हैं कि गांधीजी, लोकमान्य तिलक जैसे बड़े बड़े लोग भी पुरानी तालीम में से ही निकले हैं। उस तालीम में कुछ खराबियाँ हैं, परंतु थोड़ी हैं। उसको सुधारा जा सकता है। इस तरह अब बड़े-बड़े बुजुर्ग भी हिम्मत के साथ सामने आकर बोलने लगे हैं कि पुरानी तालीम में ज्यादा फर्क क्या करना है ?

www.vinoba.in

तालीम का ढाँचा बदलना अनिवार्य

मैं कहना यह चाहता हूँ कि हिंदुस्तान की तालीम का ढाँचा इतना दकियानूसी है कि उसपर विज्ञान का कोई असर नहीं और आज का समाज बदला है, उस माहौल (वातावरण) का भी कोई असर नहीं है, इसपर भी वह तालीम बेखटके चल रही है। तालीम याने संयोजन का एक अंग (विभाग) हो गया है। पढ़े-लिखे लोगों में जो बेकारी है, उसे हटाने के लिए क्या-क्या करना है? अब नये स्कूल खुलेंगे तो इतने मुख्य लोगों को नौकरियाँ मिलेंगी। याने तालीम की ओर भी 'जॉब' (नौकरी) देने के खयाल से देखना ही अच्छा समझा जा रहा है। पढ़े-लिखे बेकारों को नौकरी तो मिलती है। वे जिस फैक्टरी को चलाते हैं, वह फैक्टरी बेकारों की तादाद बढ़ानेवाली है, यह सोचने की बात है।

निःशुल्क शिक्षा-समस्या का कोई निदान नहीं

यहाँ बख्शीजी की सरकार ने एक बख्शीश दी है कि इस स्टेट (राज्य) में तालीम मुफ्त मिलेगी यूनिवर्सिटी तक। अब इसमें सोचने की बात है। इसका मानी यह है कि बड़े लोगों के बच्चों को सिखायेंगे। मन्त्री के, पूँजीवादियों के, बड़े-बड़े सरमायादारों के, धनी लोगों के बच्चों को सिखायेंगे। याने उनको और एक मदद मिलेगी। क्योंकि उनको फीस नहीं देनी पड़ेगी। लेकिन फीस मुआफ होने पर भी गरीबों के बच्चे बहुत ऊपर तक सीखेंगे, यह नहीं मान सकते हैं। मानी यही हुआ कि बड़ों को और एक इनाम मिला। लेकिन इतना ही इसका मानी होता है, यह भी एक खैरियत ही है। सब बच्चे अगर बेकार तालीम हासिल करेंगे तो देश को एक खतरा ही होगा। देश की यह खुशकिस्मती है कि मुफ्त तालीम में सब लड़के ऊपर तक नहीं पढ़ेंगे। आज गाँव-गाँव के लोग स्कूल चाहते हैं। उनकी माँग पर सरकार उनको एक मकान बना देती है। स्कूल की माँग क्यों होती है? इसलिए नहीं कि इल्म की प्यास है। बल्कि इसलिए कि वे चाहते हैं कि जो मेहनत-मशक्कत उनको करनी पड़ती है, जिस जहालत में वे रहते हैं, कम-से-कम उससे तो उनके बच्चे बच जायँ। लेकिन ऐसी तालीम जितनी बढ़ेगी, उतना 'फूड प्रॉडक्शन' (अन्न-उत्पादन) घटेगा। इस तालीम की फूड प्रॉडक्शन के साथ मुखालिफत (विरोध) है। ये लड़के जो सीखेंगे, उसमें हाथों से काम करने का माद्दा कितना है? हमारे एक दोस्त कहते हैं कि इस तालीम में तीन अँगुलियों का उपयोग होता है। वे लड़के नौकरी माँगेंगे। जिन्दगी में क्या हासिल करेंगे? नौकरी भी कितने लड़कों को मिलनेवाली है?

एक मध्यम वर्ग खड़ा हो रहा है

आज हिन्दुस्तान में सरकारी नौकर पचपन लाख हैं। याने पचपन लाख परिवार को सरकार वेतन देती है। साढ़े सात करोड़ कुनबों की, परिवारों की सेवा के लिए पचपन लाख सेवकों का इंतजाम सरकार करती है। याने तेरह परिवारों की सेवा के लिए एक परिवार सरकार रख रही है। मतलब, इतना एक 'मिडिल क्लास' (मध्यम वर्ग) सरकार खड़ा कर रही है। यह वर्ग उत्पादन का काम कतई नहीं करेगा। यह ठीक है कि बेकारों को कुछ काम मिलेगा, लेकिन देश को उसका फायदा नहीं होगा।

हमारे देश में यह बात चल पड़ी है कि जो हाथों से काम करेगा, उसकी इज्जत कम होगी। शिक्षक, प्रोफेसर, डाक्टर, वकील, ये सब लोग हाथों से काम नहीं करेंगे, उपज नहीं बढ़ायेंगे। लेकिन उनकी इज्जत ज्यादा होगी। वे जिस्मानी मजदूरी (शरीर-परिश्रम) से नफरत करेंगे। भगत, बाबा, फकीर, साईं, सन्त, महात्मा ये भी कभी हाथों से काम नहीं करेंगे, उत्पादन के काम में कतई भाग नहीं लेंगे। यह पहले से चला आया है। अंग्रेजी सीखे हुए लोग भी कभी उत्पादन का काम नहीं करेंगे। याने एक 'हायर मिडिल क्लास' खड़ा हुआ है, जो कायम के लिए समाज को पीसता रहेगा और कशमकश जारी रहेगी।

क्या तालीम देंगे, यह मुख्य बात है?

इसलिए तालीम मुफ्त देने से कुछ नहीं चलेगा। आप क्या तालीम देंगे, इस पर सारा निर्भर रहेगा। मैंने यहाँके हाईस्कूल में देखा। एक टाइम-टेबल तय रहता है। वह हफ्तेभर चलता है। एक ही 'पॅटर्न' (नमूना)! ऊपर से सारा लिखकर आयेगा उसमें जेर, जबर (अ, आ, इ) का भी फर्क नहीं कर सकते हैं। कुल तालीम सात दिन में देनी है। सात दिन में ४८ 'पीरिअड्स्' होते हैं। उनमें १५ 'पीरिअड्स्' अंग्रेजी, १२ 'पीरिअड्स्' गणित, नौ 'पीरिअड्स्' इतिहास और भूगोल! ये तीन कम्पलसरी विषय हैं। बाकी १२ 'पीरिअड्स्'! उनमें ५ ऐसे हैं, जिनमें से २ विषय (सब्जेक्ट) ले सकते हैं। हिन्दी, उर्दू में से कोई एक। संस्कृत, अरबी, फारसी, विज्ञान और ड्राइंग वगैरह— इनमें से दो लेने की बात है। अब इस जमाने में कौन बेवकूफ होगा, जो विज्ञान नहीं लेगा? इसलिए विज्ञान तो विद्यार्थी लेंगे ही और फिर ड्राइंग कोई क्यों लेगा? इतनी अच्छी कुदरत यहाँ है तो ड्राइंग के लिए अनुकूल हो है। इस वास्ते ड्राइंग और विज्ञान लिया तो स्टीयर क्लियर हो गया। संस्कृत और हिन्दी न ली तो भी चलेगा। याने आप ऐसे लड़कों की जमात तयार करेंगे, जो उर्दू और हिन्दी में बात ही नहीं कर सकेंगे। कश्मीरी की तो बात ही नहीं। माँ कश्मीरी में बोलेगी, बाप उर्दू बोलेगा, उस्ताद अंग्रेजी में बोलेगा। माताएँ तो कश्मीरी के सिवाय दूसरी भाषा कतई नहीं बोलेंगी। यह माताओं का फैसला है। वे (माताएँ) हमेशा राजाजी की पार्टी की रहेंगी। अगर राजाजी कोशिश करें तो बहुत सारी बहनें उनकी पार्टी में जा सकती हैं। याने ५० फी सदी वोट तो उन्हें हासिल हो ही जायँगे। मैं कहना यह चाहता हूँ कि वे अपनी चीज नहीं छोड़ती हैं। यह गुण भी है और दोष भी। इसके कारण कभी-कभी बुरी चीजें भी जड़ पकड़ लेती हैं, खैर! आखिर हमारे बच्चों का क्या हाल होगा? १५ 'पीरिअड्स्' अंग्रेजी क्यों पढ़ानी चाहिए? कहते हैं कि बच्चों का 'स्टैण्डर्ड आफ इंगलिश' गिरेगा तो कैसे चलेगा? आज वह गिरना लाजमी है। आजाद देश पर आप अंग्रेजी लादना चाहेंगे तो कौन लड़का उसे पकड़ेगा?

अंग्रेजी का प्रश्न

मैंने कहा, अंग्रेजी मजबूत करनी है तो 'क्विट इण्डिया' (भारत छोड़ो) के बदले 'रिटर्न टु इण्डिया' (भारत वापस आओ) कहना होगा। इंगलिश के लिए हफ्ते के १५ 'पीरिअड्स्' देने पर भी आप कहते हैं कि इंगलिश अच्छी नहीं रही। इसका मानी यह है कि इंगलिश को आप इतना वक्त नहीं देते तो उर्दू, हिन्दी अच्छी कर सकते थे। याने अंग्रेजी पढ़ाने की इतनी 'निगेटिव वैल्यू' है।

मैं अंग्रेजी के खिलाफ नहीं हूँ। मैंने तो इसी यात्रा के दरम्यान जर्मन और जापानी भाषा सीखी है। परदेशी भाषाओं की मैं कदर करता हूँ। मैं तो चाहता हूँ कि लड़के जापानी, चीनी, रूसी, जर्मन, फ्रेंच, फारसी, अरबी, इस तरह अपने अड़ोस-पड़ोस के देश

www.vinoba.in

की ज़बानें सीखें, जिन भाषाओं में जो साहित्य है, उसे पढ़ें। जिसमें विज्ञान है वह लोग सीखें, उसमें माहिर हों। लेकिन थोड़ा-थोड़ा सबको दें, दो-दो तोला हरएक को मिले, इसके बजाय चन्द लोग अच्छी अंग्रेजी सीखें तो ठीक, नहीं तो सी, ए, टी, कैट, सी, ए, टी,—कैट, डी, ओ, जी, डॉग, डी, ओ, जी, डॉग करने से क्या होगा ?

हम हाईस्कूल में पढ़ते थे, तब क्लास में प्रवेश करते समय 'में आय कमिन सर' (सर, क्या हम अन्दर आ सकते हैं ?), इस तरह अंग्रेजी में पूछना पड़ता था। मेरी और उस्ताद की मादरी ज़बान एक ही थी। उस पर भी उस्ताद को अंग्रेजी में पूछना पड़ता था कि क्या मैं अन्दर आऊँ ? हिन्दी में पूछने का परहेज था। कोई सवाल पूछना हो तो भी अंग्रेजी में पूछना पड़ता था। अगर अंग्रेजी में बोल न सके तो सवाल भी मन में ही रह जाता था। इतना अंग्रेजी पर जोर देने पर भी हिन्दुस्तान में अच्छी अंग्रेजी जाननेवाले दो प्रतिशत लोग होंगे। बाकी लोग अंग्रेजी नहीं जानते हैं। इतनी मेहनत करने के बाद और इतनी अहमियत देने के बाद भी यह स्थिति है कि लड़के सी, ए, टी कैट, और डी, ओ, जी, डॉग ही करते रहते हैं। इससे क्या फायदा ? इसके बजाय चन्द लोग सीखें, बहुत बढ़िया सीखें। लेकिन आम लोगों पर, बच्चों पर अंग्रेजी लादी जाय तो मुझे उसके लिए एक ही लफ्ज सूझता है, यह जुल्म है। खुशी की बात है कि लड़के इसे कबूल नहीं करते हैं।

आध्यात्मिक शिक्षा आवश्यक

तालीम में बच्चों को कुछ-न-कुछ मुफीद काम सिखाना चाहिए। आज ऐसी तालीम नहीं देते हैं, जिससे कि देश की दौलत बढ़े। तालीम में दूसरा नुक्स यह है कि अंग्रेजी लादी जाती है, जिसकी वजह से लड़के मादरी जबान भी ठीक से नहीं सीख पाते। तीसरा नुक्स यह है कि इस तालीम में आध्यात्मिक चीज नहीं है। कहा जाता है कि बाइबिल, कुरानशरीफ, गीता, जपुजी, यह सब नहीं सिखा सकते हैं। याने जिन चीजों ने हजारों वर्षों से हम लोगों के दिल और दिमाग पर असर डाला है और जिनसे लोगों का स्वभाव बनता है, वह सब हम स्कूलों में नहीं सिखा सकते हैं ! कहा जाता है कि स्कूलों में धर्म-निरपेक्ष ज्ञान ही दिया जा सकता है। यह बात पहले से आज तक मेरी समझ में नहीं आयी कि यह धर्म-निरपेक्षता क्या है और इसका मानी क्या है ? जिससे बच्चों के दिमाग में विश्वास पैदा हो, परमात्मा, अल्ला की तरफ उनका रुझान हो, उनके मन में अल्ला के लिए डर हो, प्यार हो—यह जरूरी है कि गैरजरूरी है, इस पर आप सोचिये। अगर गैरजरूरी साबित होता हो तो फिर उसकी तालीम मत दीजिये। लेकिन जरूरी साबित होता हो तो उसकी तालीम कौन देगा ? इन दिनों सरकार ने कुल काम करने का ठेका ही ले लिया है, फिर इसे भी वे ही उठायें। कुछ लोग कहते हैं कि मजहबवाली जो अच्छी-अच्छी किताबें हैं, उनकी कोई जरूरत नहीं है। अब आप जरा सोचिये कि क्या हर भाषा में अच्छे से अच्छे साहित्य की किताब नहीं है। हिंदी में तुलसी रामायण से बढ़कर कौन किताब होगी, जो साहित्य की दृष्टि से बेहतर हो ? संस्कृत में उपनिषद्, रामायण, महाभारत, तमिल में कुरल, कंब रामायण, वहाँके भक्तों के भजन, इन सबसे बढ़कर कौन चीज है, जो साहित्य के खयाल से सीखने लायक है। हिंदुस्तान का कुल का कुल साहित्य धर्म के साथ जुड़ा है, फिर चाहे वह हिंदी का हो, पंजाबी का हो, बंगाली का हो या तमिल का हो। चैतन्य, कबीर, मीरा, नानक, तुलसी—इन सबको टालकर आप बच्चों को कौन-सी चीजें सिखानेवाले हैं ? ये सारी चीजें धर्म-निरपेक्षता में नहीं आतीं, यूँ कहकर आप पढ़ाना छोड़ देंगे तो फिर आप क्या पढ़ायेंगे ? जिस तालीम का रूहानियत से कुछ वास्ता नहीं, जिसमें कोई चीज पैदा करने का इल्म नहीं, जिसमें मादरी जबान का ज्ञान नहीं, ऐसी तालीम से क्या फायदा होनेवाला है ? ऐसी तालीम पाने से तो बिलकुल ही तालीम न पाना बेहतर है। एक भाई ने कहा कि 'सम एज्युकेशन इज बेटर दैन नो एज्युकेशन' मैं कहता हूँ 'कि नो एज्युकेशन' इज बेटर दैन समहाउ एज्युकेशन" मैं आपको 'चैलेंज' दे रहा हूँ। क्या आप समझते हैं कि आप नहीं सिखायेंगे तो बच्चे नहीं सीखेंगे ? मुसलमान लोग जिसकी सबसे ज्यादा कद्र करते हैं, इज्जत करते हैं, वह (महमद पैगम्बर) 'अनलेटर्ड प्रॉफेट' था, पढ़ना-लिखना नहीं जानता था। लेकिन हमने पढ़ने लिखने को इतनी अहमियत दी है। तिसपर भी जो नहीं पढ़े हैं, जिनको नहीं पढ़ाया है, वे निकम्मे नहीं रह गये हैं और न निकम्मे ही रहेंगे।

माता का महत्त्व

फ्री एज्युकेशन और कम्पल्सरी एज्युकेशन का मंसूबा परमात्मा ने तैयार किया है और वह हर बच्चे को दे रहा है। हर बच्चे को माँ की गोद में जन्म दिया है। माँ उसे बचपन से मादरी जबान सिखाती है। यह है फ्री एज्युकेशन। हर-एक के पेट में भूख होती ही है। इसलिए काम करना पड़ता है। यह ज्ञान, इल्म होगा, यह है कम्पल्सरी एज्युकेशन। इस तरह फ्री और कम्पल्सरी एज्युकेशन परमात्मा दे रहा है। आप हट जायँगे तो इसमें कोई फर्क पड़नेवाला नहीं है। मौजूदा तालीम में मुझे किसी प्रकार की तसल्ली नहीं है, इतमीनान नहीं है। तालीम का ठेका आपने क्यों ले रखा है ? सरकार में है तालीम देने की कूवत ?

केरल का शिक्षा-बिल

केरल की सरकार ने एज्युकेशन बिल बनाया तो उसके खिलाफ वहाँके ईसाई खड़े हुए। फिर वह बिल राष्ट्रपति के पास भेजा गया। राष्ट्रपति ने उसे सुप्रीमकोर्ट के पास भेजा। इस तरह फुटबॉल का खेल चलता रहा। इधर से लात मारकर उधर और उधर से लात मारकर इधर भेजा गया। आखिर सुप्रीम कोर्ट उसे लात मारकर आगे नहीं भेज सकता था। इसलिए उसने थोड़े सुधार पेश किये, जो बिलकुल मामूली थे, उस बिल का ज्यादा रूप बदलनेवाले नहीं थे। केरल की कम्युनिस्ट पार्टी ने वे सुधार मान्य किये और उसके मुताबिक सुधरा हुआ बिल लाया, जो वहाँ की असेंबली ने पास किया। उसके खिलाफ वहाँके लोग खड़े हुए। मेरी उनके साथ हमदर्दी है, जो उस बिल के खिलाफ हैं, इसलिए कि मैं चाहता हूँ कि तालीम सरकार के हाथ में न रहे।

आज तालीम सरकार के हाथ में है और सरकार का वह फंक्शन (कार्य) माना जाता है। इस हालत में केरल की हुकूमत ने जो किया, वह ठीक ही था। कम्युनिस्ट जरा ज्यादा क्षमतावान होते हैं, इसलिए उन्होंने 'वहाँ ठीक ढंग से कस लिया। लेकिन आप भी दूसरे सूबों में उसी तरह कसते हैं। अभी मैं पंजाब से आया हूँ। मैंने वहाँ देखा कि वहाँकी सरकार ने स्कूल की फीस मुआफ की तो उसका नतीजा यह हुआ कि वहाँ जो अच्छी चीज, खानगी शालाएँ—जो फीस के आधार पर चलती थीं—बन्द हो रही हैं। इस सबके मानी यह है कि आप सरकार के हाथ में तालीम रखना

www.vinoba.in

चाहते हैं, ठीक से कसना चाहते हैं और तालीम का पेटर्न बनाना चाहते हैं।

शिक्षा पर सरकारी नियंत्रण नहीं चाहिए

आप जो तय करेंगे, वही कुल लड़कों को पढ़ना होगा। हमने कई दफा कहा है कि आज के शिक्षण-विभाग के अधिकारी के हाथ में जो ताकत है, वह पहले बड़े-बड़े आलिमों के, विद्वानों के भी हाथ में नहीं थी। हिन्दुस्तान में या दुनिया में ऐसी कोई तालीम नहीं निकली, जो हरएक के लिए लाजमी हो सके, लेकिन शिक्षण-विभाग का अधिकारी आज मनचाही किताब को लाजमी कर सकता है और कह सकता है कि स्टेट के हर बच्चे को फलानी किताब पढ़नी ही चाहिए। जो किताब वह तय करेगा, उसीका अध्ययन, चिन्तन, मनन, रटन हर लड़के को करना होगा। इसके मानी यह है कि सरकार के हाथ में तालीम का एक शिकंजा है। तालीम के लिए वह सब बच्चों को एक साँचे में ढालना चाहती है। दिमाग की आजादी के लिए इससे खतरनाक बात और क्या हो सकती है? तालीम सरकार के हाथ में रहती है तो फिर कम्युनिस्ट हुकूमत हो तो सब बच्चों को कम्युनिज्म पढ़ाया जाता है। केरल की कम्युनिस्ट हुकूमत के खिलाफ यही शिकायत थी कि उसने जो किताब स्कूल के लिए लाजमी की थी, उससे तालीम को एक ढाँचे में ढालने की कोशिश हो रही थी। अगर फासिस्ट हुकूमत हो तो सब बच्चों को फॅसीज्म की तालीम दी जाती। हिटलर यही करता था। वहाँके कुल बच्चों के दिमाग वह जिस ढंग के बनाना चाहता था, वैसे बना रहा था। अगर जनसंघ की सरकार हो तो उसका तत्त्वज्ञान बच्चों को सिखाया जायगा और वेलफेयर स्टेट हो तो पंचवर्षीय योजना के गाने सिखाये जायँगे। इस तरह बच्चों का दिमाग एक ढाँचे में ढालने की जो बात है, वह लोकशाही के खिलाफ है। डिसिप्लीन के नाम पर यह सब होता है, लोगों को बिलकुल मशीन बनाया जाता है।

पिछली लड़ाई में दुनिया ने एक तमाशा देखा। जब हुक्म हुआ, तब जर्मनी की ५० लाख फौज ने हमला किया। लोगों का अपना कोई अभिक्रम नहीं था। वे सिर्फ हुक्मबरदार थे। चार साल के बाद जब जर्मनी ने देखा कि अमेरिका की ताकत बढ़ी है तो जर्मन सैनिकों को शस्त्र रखने का हुक्म दिया। एक ही दिन में १० लाख की फौज ने हथियार नीचे रख दिये।

सेनापति की ओर से फौज को कहा जाता है कि "आपको सवाल पूछने का हक नहीं है, क्योंकि आपको तो सिर्फ हुक्म के मुताबिक करना है और मरना है।"

सर्वोदय-विचार की माँग

सर्वोदय-विचार की यही माँग है कि तालीम सरकार के हाथ में नहीं रहनी चाहिए। अपनी सरकार को चाहिए कि वह देश के विद्वानों को आजादी दे और लोगों को उत्तेजन दे कि लोग जिस किस्म की तालीम चाहते हैं, वे दे सकें। अभी बंबई राज्य में एक तमाशा चल रहा है। वहाँकी हुकूमत ने पहले तय किया था कि स्कूल में आठ जमात के बाद अंग्रेजी शुरू हो। चार-पाँच साल तक वह रहा। अब फिर से पाँचवीं जमात के बाद अंग्रेजी पढ़ाने की बात चली है। आप कौन होते हैं बच्चों की जिंदगी के साथ, दिमाग के साथ खिलवाड़ करनेवाले? आपको क्या हक है? माँ-बाप अपने बच्चों को जो भी सिखाना चाहें सिखायें, लेकिन आप कैद रखते हैं कि सरकार की नौकरी उसीको मिलेगी, जो डिग्री पाया हुआ है। इसके मानी यह है कि आपने तालीम की जो राह बनायी है, उसीसे जानेवाले को नौकरी मिलेगी। आपको इल्म की कद्र नहीं है, मशीन की कद्र है। मैं क्या अपने लड़के को तालीम देने के लिए नाकाबिल हूँ? क्या डिग्री पाया हुआ प्रोफेसर तालीम दे सकता है?

डिग्री के बजाय विभागीय परीक्षा हो

मैंने सरकार के सामने सुझाव रखा है कि आप डिपार्टमेन्टल परीक्षा लें। जो भी परीक्षा देना चाहे, वह फीस देकर परीक्षा देगा और पास हुआ तो नौकरी मिलेगी। उस परीक्षा के लिए डिग्री की कैद क्यों होनी चाहिए? इसपर सरकारवाले कहते हैं कि ऐसा करने से परीक्षा देनेवालों की बहुत बड़ी तादाद होगी। मैं कहता हूँ इससे आपका क्या नुकसान है? अगर ५ लाख लोग परीक्षा दें तो आप प्रति व्यक्ति ५ रु० फीस रखो, आपको ५० लाख रु० मिल जायँगे। क्या ५० लाख से ५ लाख का इम्तिहान नहीं हो सकता है? इस तरह से जो बिलकुल फिजूल आक्षेप उठाये जाते हैं, उसके मूल में यह है कि वे अपने हाथ से तालीम नहीं जाने देना चाहते हैं, उसे कसकर रखना चाहते हैं।

दो साल पहले पं० नेहरू हमसे मिले थे। उनके सामने यह बात रखी थी कि आप डिपार्टमेंटल परीक्षा लें तो खानगी स्कूलों को उत्तेजन मिलेगा। फिर लोग अपने-अपने स्कूल चलायेंगे। उन्होंने कहा कि मैं आपके इस सुझाव को पसंद करता हूँ। फिर उन्होंने इसके लिए एक कमेटी बनायी। दो साल बाद मेरे पास उस कमेटी की रिपोर्ट आयी। वह चारे की टोकरी में डालने लायक है। उस कमेटी ने जो सिफारिश की है, उसमें कुछ है ही नहीं। उसमें कहा गया है कि पहले और दूसरे दर्जे की नौकरी के लिए डिग्री चाहिए। तीसरे दर्जे की नौकरी के लिए कहीं डिग्री की जरूरत रहेगी तो कहीं नहीं रहेगी। अभी कैबिनेट (मंत्रि-मंडल) ने फैसला दिया है कि डिग्री की जरूरत है। दो साल के बाद यह फैसला होता है तो मैं लोगों से कब तक यह बात छिपाकर रखूँगा और कब तक सरकार पर टीका न करूँगा।

सरकारी टीका क्यों नहीं की जाय?

कुछ लोग कहते हैं कि आप सरकार पर टीका क्यों करते हैं? आपके दिल में कोई बुराई नहीं है तो फिर उनको (सरकारवालों को) प्राइवेटली (खानगी) पत्र क्यों नहीं लिखते हो? मेरा यह जवाब है कि क्या मैं सरकार की बेटी या बीबी हूँ कि उन्हें प्राइवेटली पत्र लिखूँ? लोकशाही में लोगों के सामने अपनी बात रखने की आजादी हरएक को होनी चाहिए। मेरी जबान में कड़ुआपन है ही नहीं। आप कहींसे लाना चाहें तो भी नहीं आयेगा। यहाँके केशर में अच्छे गुणों के साथ कुछ कड़ुआपन है, वैसा बाबा की जबान में नहीं है। मैं सरकार से पूछना चाहता हूँ कि आप अपने डिपार्टमेंट की परीक्षा क्यों नहीं लेते? मैं डिग्रीयाफ्ता नहीं हूँ, क्योंकि मैंने पहले से ही कॉलेज छोड़ दिया था। अगर मैं नौकरी माँगने जाऊँ तो मुझे नहीं मिल सकेगी। मुझे किसी विद्यापीठ की डिग्री हासिल करनी होगी। मैं नौकरी चाहता नहीं हूँ, यह बात अलग है। लेकिन अगर चाहूँ तो मेरे लिए परीक्षा देने के सिवाय दूसरा चारा नहीं है। यह अकल की बात नहीं है। आपकी परीक्षा ऐसी कौन-सी गंगोत्री है कि पानी उसी मुख से आना चाहिए, दूसरे मुख से नहीं।

बड़े-बड़े लोग भी यही कहते हैं। लेकिन कोई सुनता नहीं। फिर मैं सूरदास का एक भजन गाता हूँ—"ऊधो कर्मन की

www.vinoba.in

गति न्यारी। मूरख मूरख राजा कीन्हे। पंडित फिरत भिखारी।" हे उधो कर्मों की गति न्यारी है, उसके कारण दुनिया में अजीब तमाशा दीखता है। जो मूरख हैं, उनको चुन-चुनकर राजा बनाया है और पंडित भिखारी बनकर आठ साल से घूम रहा है!

इस तालीम को दफनाइये

मैं चाहता ही नहीं कि मेरा किसीपर दबाव पड़े। इसलिए मुझे समझने में ही खुशी मालूम होती है। लेकिन जमाने की माँग है कि आज जो तालीम चल रही है, उसे जल्द से जल्द दफनाया जाय। दो तरह से दफनाया जाता है। पिताजी की लाश को इज्जत के साथ दफनाया जाता है। लेकिन यह हमारी तालीम इज्जत के साथ दफनाने लायक है ही नहीं। यह बुरी चीज है, जो हिंदुस्तान के जिगर को खा रही है। लोगों का पराक्रम खत्म कर रही है। इसलिए उसे तो दूसरे तरीके से ही दफनाया जाना चाहिए।

आप बच्चों को इतनी बेकार तालीम देते हैं और कहते हैं कि बच्चों में अनुशासन नहीं है। मुझे तो ताज्जुब होता है कि बच्चे इतने भी अनुशासित कैसे हैं! मैं तो अनुशासन में नहीं रहता था। प्रोफेसर कोई लेक्चर, तकरीर करें और मैं सुनता रहूँ, यह कभी नहीं हो सकता था। मैं तो घूमने चला जाता था। अगर उनका सारा इल्म मैंने लिया होता तो आज मैं कहाँ होता? कहीं नौकरी करता और पेन्शन लेकर बैठा रहता।

सर्वोदय के बुनियादी उसूल

सर्वोदय के बुनियादी उसूल इस प्रकार हैं:

(१) तालीम लोगों के हाथ में होनी चाहिए।

(२) तालीम का जरिया मादरी जबान ही होना चाहिए।

(३) उसके साथ-साथ दूसरी जबानें भी सिखा दी जायँ, लेकिन लादी न जायँ।

(४) तालीम में अखलाकी, रूहानी चीज जरूर होनी चाहिए।

(५) तालीम में कोई न कोई दस्तकारी जरूर होनी चाहिए।

इन पाँच उसूलों को हम कभी नहीं छोड़ सकते हैं। आप इसपर सोचिये। सरकार आपकी बनायी हुई है, इसलिए आप सोचेंगे तो तालीम में जरूर फर्क हो सकता है।

अपने देश की विशेषता

हमें मगरीब (पश्चिम) से बहुत सीखना है, खासकर विज्ञान लेना है। मैं विज्ञान का कायल हूँ। जितना विज्ञान बढ़ेगा, उतनी रूहानियत बढ़ेगी। विज्ञान और रूहानियत के जोड़ से इन्सान इस दुनिया में बहिश्त (स्वर्ग) ला सकेगा। मगरीब ने विज्ञान बहुत विकसित किया है। इसलिए उसे जरूर सीखना चाहिए। लेकिन हमारे देश की अपनी भी कुछ चीजें हैं, जिनमें तालीम एक है। जिस जमाने में यूरोप में तालीम नहीं थी, उस जमाने में हिंदुस्तान में काफी तालीम थी। उपनिषद् में, जो कि चार हजार साल पहले की किताब है, एक राजा अपने राज्य का बयान करता है। "न मे स्तेनो जनपदे। न कदर्यो न मद्यपः, न अविद्वान्।" मेरे राज्य में कोई चोर नहीं है और कोई कंजूस नहीं है। इसमें उसने चोर के साथ कंजूस को जोड़ दिया, क्योंकि कंजूस चोर का बाप है, जो उस बेटे को पैदा करता है। राजा कहता है कि मेरे राज्य में कोई शराब पीनेवाला नहीं है और कोई अविद्वान् नहीं है। याने सिर्फ पढ़ा-लिखा ही नहीं, बल्कि आलिम नहीं, ऐसा शख्स मेरे राज्य में कोई नहीं है। इस तरह चार हजार साल पहले का राजा अपनी हुकूमत का बयान करता है। तालीम अपने देशकी खास अपनी चीज है। जिसमें हमने दस हजार साल का तजुरबा हासिल किया है।

बेतजुरबेकार उस्ताद!

हमने तय किया था कि इन्सान की जिंदगी में तालीम देना हरएक का फर्ज है। बचपन में इन्सान ब्रह्मचर्य की तालीम लेगा। फिर गृहस्थ बनेगा। उसके बाद पुख्ता उम्र आयेगी तो वह वानप्रस्थी बनेगा। कुरान-शरीफ में कहा है कि चालीस साल की उम्र में दिल दुनिया से हटकर परमात्मा की तरफ जाता है, जाना चाहिए। पैगंबर ने अपने तजुरबे से यह बात कही है। चालीस साल के बाद उनका दिल परमात्मा की तरफ गया था। ब्रह्मचारी याने पढ़नेवाला लड़का, गृहस्थ याने दुनिया में काम करनेवाला। तीसरी अवस्था वानप्रस्थ की है, जो तजुरबेकार (अनुभवी) होता है। इसलिए उसका फर्ज है कि वह विद्यार्थियों को पढ़ाये। आज तो यह होता है कि बीस साल का जवान डिग्री हासिल करके टीचर या प्रोफेसर बनता है। बी. काम. पास करनेवाला जवान क्या कॉमर्स (व्यापार) टीचेगा? क्या उसने कभी व्यापार किया था? पाँच हजार रुपये उसे दे दिये जायँ तो वह उसके ५० हजार नहीं बना सकेगा, ५०० ही बनायेगा। उसे कुछ भी तजुरबा नहीं है। उसने सिर्फ किताबें पढ़ी हैं। ऐसे बेतजुरबेकार जवान उस्ताद बनते हैं तो बच्चों को क्या तालीम मिलेगी? यह बी. काम. बेकाम ही होते हैं। उसी तरह 'पॉलिटिक्स' पढ़ानेवाले भी जवान ही होते हैं, जिन्हें कुछ भी तजुरबा नहीं होता। 'पॉलिटिक्स' कौन पढ़ायेगा? पं० नेहरू नाहक प्राइमिनिस्टर बनकर बैठे हैं। वे प्राइमिनिस्टरी छोड़कर उस्ताद बनें तो 'पॉलिटिक्स' अच्छी तरह पढ़ा सकते हैं। यह अपने देश की चीज है कि इन्सान को एक उम्र के बाद उस्ताद बनना चाहिए। आपने तालीम पायी है, इसलिए तालीम देना आपका फर्ज है। अगर मेरा निज़ाम (राज्य) चले तो मैं पं० नेहरू को राजनीति का प्रोफेसर बनाऊँगा और घनश्यामदास बिड़ला को कॉमर्स (व्यापार) का प्रोफेसर।

हम आधुनिक जमाने में हैं, इसलिए लोग सोचते हैं कि हमारे पास कुछ भी नहीं है, सब कुछ मगरीब से ही लेना है। जो उठा सो प्रोवेल, पेस्टोलॉजी और मान्टेसरी की बातें समझाता है। यह बात सही है कि उन्होंने कुछ तजुरबे हासिल किये हैं। लेकिन उन लोगों के पास आत्मा को पहचानने की कोई चीज नहीं है। जो आत्मा को नहीं पहचानते, वे कितनी भी ऊँची उड़ान उड़ें तो भी तालीम नहीं दे सकते। तालीम का माहिर वही हो सकता है जो आत्मा को पहचानता है। ♦♦♦

अनुक्रम

१. यदि आत्मदर्शन नहीं हुआ तो केवल अमरनाथ के दर्शन…
पहलगाँव १३ अगस्त '५९ पृष्ठ ६२९.
२. 'पदे-पदे यन्नवतामुपैति तदेव रूपं नवशिक्षणस्य
श्रीनगर ५ अगस्त '५९ ,, ६३०

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता: गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन: १३९१ तार: 'सर्व-सेवा' वाराणसी
www.vinoba.in